

जिम्बेकी उराम ॥

जिं पुं य उ ड्डा कृ षु ज भ षुं । व कृ षु ति नि च लं नि चि
 क रं ॥ भ ड्डा भ षुं नि चि मे धं नि गी कं भ ड्डं भ षुं सि
 षु षु ड्डा मी पः ॥ न षुं ल क षु थ र च व भ षुं
 क षु उ षु मि षु उं ग उ षु ॥ षु ज षु ज क ल व ग न
 ग उ ठ व न कः मि षु उ मे ध भ षुं ॥ ॥ ये यं क
 ल भु षु उ षु ज व रं मे षु भ षुं षु उ ये न वि षुं
 नि मे ध मि व षु रं मे षु की यं भु षुं स नं क भ षुं
 भ षुं प षु ॥ ॥ मे षु भ षुं ल क उः प ल य च

2
 लेक विरुयंन पुगमु इदमं भूयस्य सुय
 सुभुः सउभा इरभमयैतु ॥ ५ ॥ सुखं ॥
 जिनभभिद्वाननुमजिं धरमं भवद्वानं केव
 ल्हादिभाउं विमद्विभुनभं रणे केउं यउ
 इद्वनिद्वं सुमा विभी केल्लैव कम् रणीयुः सु
 वे सुयं मेउं भूयस्य विकारः उद्वयउती
 रणरे भूयस्य सु सुययभउतिरेपं भूयस्य ॥ ३ ॥
 नानाकवे लीनैयेव भवेनैव वाक् प्रलेकम

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

[illegible]

5

मङ्गलार्थोत्तरकर्मणि भक्तु काले विवल्नयेत्। सुकारं भेषु न निष्ठा
 पुण्यां विवल्नयेत् ॥ सुकारं यत्तु गति अरुण ठासु भेषु न भ
 वल क्रीडु मयान् भुधा पुण्यां गाय धाम्जयः ॥ सुषण निधु धासु कं
 म्भे देवता धाम्ठा कृत्तिके डर ठासु ॥ अचठा रुविमगापाम सुय
 धुरभा ॥ द्वितीया कृष्ण मसी धनी नच भीम मडमसी कृष्ण
 भेदे मभुद मनिस्त्रै रप्रकीर्तितः ॥ राभुव किंजु लीठरु ३१०३ पु
 न्दरिङ्गा मृगै कथात् ॥ अठ ५००० सत्रिथे पुणायामेव विवेक
 ॥ प्रलिभा प्रलिभु पुणमसी नन्ना एनिधु धासु कं भुत्तभा ॥
 ॥ सुथभापि प्रयच्छि भवत् ॥ प्रयमं द्विधमना ॥